बेख़बर

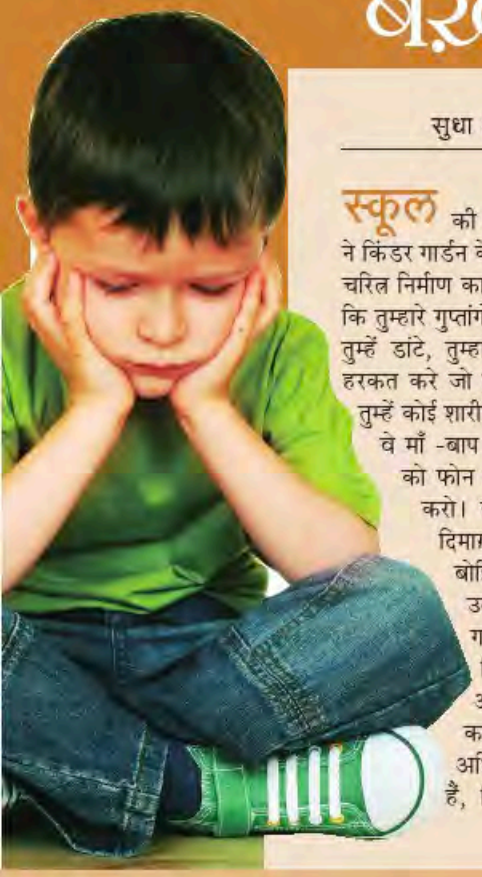

सुधा ओम ढींगरा

स्कूल की मार्गदर्शक परामर्शदाता ने किंडर गार्डन के छोटे -छोटे बच्चों को चरित्र निर्माण का ज्ञान देते हुए समझाया कि तुम्हारे गुप्तांगों को कोई हाथ लगाए, तुम्हें डांटे, तुम्हारे साथ कोई अनुचित हरकत करे जो तुम्हें अच्छी न लगे या तुम्हें कोई शारीरिक चोट पहुँचाए, चाहे वे माँ -बाप ही क्यों ना हों, पुलिस को फोन करो या टीचर से बात करो। छोटे -छोटे बच्चों के दिमाग बड़ी-बड़ी बातों से बोझिल हो गए। विचार उलझे बालों से उलझ गए। बाल-बुद्धि ने अपने हिसाब से ग्रहण किया। अमेरिका में बच्चों को कच्ची उम्र में उनके अधिकार बता दिये जाते हैं, जिन्हें वे पूरी तरह से समझ भी नहीं पाते। बच्चे ने उस अधिकार का प्रयोग कर लिया। पापा ने कल उसे थप्पड़ मारे थे। उसने टीचर को बता दिया। उसी का परिणाम घर में हंगामा हो रहा है। सामाजिक कार्यकर्त्ता उनका एक-एक कमरा ख़ास कर बच्चे का कमरा बार-बार देख रही है। ढूंढ़ रही है कि कहीं कोई ऐसा सुराग मिल जाए ताकि मां-बाप दोषी साबित हो सकें। उसे परिवार से अलग करने की बात कही जा रही है और माँ दिल पर हाथ रख कर रो रही है। पापा भरी-भरी आंखों से अपनी बात स्पष्ट करने की कोशिश कर रहें हैं। कार्यकर्त्ता की बातें सुन बच्चा रुआंसा हो गया है। वह एक तरफ डरा-सहमा दुबका बैठा सोच रहा है कि शिकायत करने के बाद उसे मां-बाप से अलग कर पोषक-गृह में भेज दिया जायेगा। ऐसा तो गाईडेंस कौंसलर ने नहीं बताया था। बाल बुद्धि और उलझ गई। मां-बाप से अलग होना पड़ेगा, सुन कर वह बेचैन हो गया। टीचर पर बहुत गुस्सा आया, मैडम ने और लोगों को क्यों बता दिया? उसके मां-बाप तो बहुत अच्छे हैं। उसे बहुत प्यार करते हैं। वह उन्हें छोड़ कर कहीं नहीं जाएगा। वह कई दिनों से होमवर्क नहीं कर रहा था तभी तो पापा ने गुस्से में एक थप्पड़ मारा था, उसने झूठ बोला था कि पापा ने कई थप्पड़ मारे थे और पापा रोज़ मारते हैं। वह तो चाहता था कि टीचर उसके पापा को डांटे और पापा उसे होमवर्क के लिए न कहें।

माँ रोते-रोते बेहोश होने लगी। समाज सेविका पानी लेने दौड़ी। बच्चे को लगा कि उसकी माँ मर रही है। वह उसके बिना कैसे रहेगा? वह रात को कैसे सोएगा। उसकी माँ उसे हर बात पर चूमती है ..कहानियाँ सुनाती है। उसके पापा उसे ढेरों खिलौने ले कर देते हैं। उसके साथ फिशिंग, बोलिंग, साईक्लिंग के लिए जाते हैं।

वह ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा-- "मेरे मम्मी -पापा को छोड़ दें। मैंने टीचर से झूठ बोला था । मेरा पापा ने मुझे थप्पड़ नहीं मारे थे।" कह कर, वह भाग कर माँ से लिपट गया।

समाज सेविका बच्चे का रोना देख पसीज गई। उसके अपने बच्चे उसकी आँखों के सामने सुबकने लगे।

"बच्चे इस उम्र में परिणाम से बेख़बर अनजाने में कई बार झूठ बोल देते हैं।" खुली फाईल को बंद करते हुए वह यह कह कर घर से बाहर निकल गई।

सच कहूँ

सच कहूँ,
चाँद- तारों की बाते अब नही सुहाती .....
वह दृश्य अदृश्य नही हो रहा
उसकी चीखें कानों में गूंजती है रहती
उसके सामने पति की लाश पड़ी थी,
वह बच्चों को सीने से लगाए बिलख रही थी
पति आत्महत्या कर
बेकारी, मायूसी, निराशा से छूट गया था ।
पीछे रह गई थी वह,
आर्थिक मंदी की मार सहने,
घर और कारों की नीलामी देखने ।
अकेले ही बच्चों को पालने और
पति की मौत की शर्मिंदगी झेलने ।
बार -बार चिल्लाई थी वह, कायर नही थे तुम
फिर क्या हल निकाला, तंगी और मंदी का
तुमने । आँखों में सपनों का सागर समेटे,
अमेरिका वे आए थे ।
सपनों ने ही लूट लिया उन्हें
छोड़ मँझधार में चले गए ।
सुख -दुःख में साथ निभाने की
सात फेरे ले कसमें खाई थी ।
सुख में साथ रहा और
दुःख में नैया छोड़ गया वह ।
कई भत्ते देकर अमरीकी सरकार
पार उतार देगी नौका उनकी ।
पर पीड़ा, वेदना तन्हाई दर्द
उसे अकेले ही सहना है
सच कहूँ, प्रकृति की बातें
फूलों की खुशबू अब नही भरमाती.....

sudhadrishti@gmail.com

पतंग

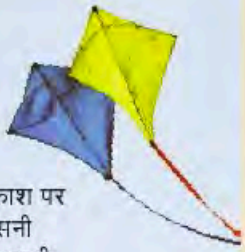

परदेस के आकाश पर
देसी मांजे से सनी
आकाँक्षाओं से सजी
ऊँची उड़ती मेरी पतंग
दो संस्कृतियों के टकराव में
कई बार कटते -कटते बची
शायद देसी मांजे में दम था
जो टकरा कर भी कट नही पाई
और उड़ रही है .....
विदेश के ऊँचे- खुले
आकाश पर ....
बेझिझक, बेखौफ ....ज़िन्दगी फिर
भी पकड़ में नही आई.....
बालू सी हाथ से सरक गई.....